भारत-अमरीका संबंधों की उन्नति के लिए ओबामा की शर्त: भारत में आन्तरिक-शान्ति स्थिति सुधारी जाए

डा. सैयद ज़फ़र महमूद

अमरीका के राष्ट्रपति बारक ओबामा ने दिल्ली में अलाउद्दीन ख़िलजी के क़िले के प्रांगण में बने सिरी फ़ोर्ट ऑडिटोरियम में भारी संख्या में युवाओं सहित भारत की जनता को सम्बोधित करते हुए इच्छा प्रकट की कि भारत और अमरीका के सम्बंधों में उन्नति होनी चाहिए लेकिन उन्हों ने कहा कि उनकी यह कामना निश्चित रूप से कुछ विशेष शर्तों से बन्धी हुई है।

"भारत और अमरीका के एक ही तरह के आदर्शों की रोशनी में मैं यह समझता हूं कि यह दोनों देश मिल-जुल कर बहुत कुछ हासिल कर सकते है।" ओबामा ने इस मक़सद के लिए ज़रूरी शर्तो को भी बयान किया और यह कहा कि "हमारे जैसे बड़े और विविधता वाले समाजों की तरक़्क़ी इस पर निर्भर है कि हम एक दूसरे से कैसा व्यवहार करते हैं। अगर हमें हर इंसान के अन्दर उसका आत्म सम्मान और उसकी आत्म प्रतिष्ठा अच्छी लगने लगे तो हमारा यह चरित्र हमें बहुत ज़्यादा मज़बूत बना सकता है।"

26 जनवरी को लहराते हुए तिरंगे के नीचे खड़े होकर ओबामा ने हमारे उस लोकतान्त्रिक संविधान के जश्न में भाग लिया जो हर व्यक्ति की प्रतिष्ठा और सम्मान की शपथ से शुरू होता है। उन्होंने कहा कि "आपके संविधान की धारा 25 यह कहती है कि सभी लोग अन्तरात्मा की आज़ादी और अपने धर्म को मानने, उस पर चलने और उसका प्रचार करने का बराबर से अधिकार रखते हैं। इन मूल्यों के साथ जीने के लिए कई पीढ़ियों ने मेहनत की है और इस मूल स्वतन्त्रा को बनाए रखना सरकार की भी उतनी ही ज़िम्मेदारी है जितनी हर व्यक्ति की है।"

ओबामा ने कहा कि “स्वंय से भिन्न लोगों के साथ हम किस तरह बर्ताव करते हैं, आस्थाओं और मान्यताओं की विविधता हमें कैसी लगती है यह बहुत मत्वपूर्ण है। हर आदमी के सपने और उसकी आकांक्षाएं उतनी ही महत्वपूर्ण, उतनी ही सुन्दर और उतनी ही क़ीमती हैं जितनी किसी और की । अस्ल बात यह है कि हमारे कामों का उद्देश्य थोड़े से ही लोगों को फ़ायदा पहुंचाना नहीं हो बल्कि हर एक को अवसर मिले, हर व्यक्ति जो ऊंचे सपने देखता है उसे उन सपनों को साकार करने का अवसर मिलना चाहिए।” उन्होंने ज़ोर देकर यह बात कही कि हमारे राष्ट्र तभी मज़बूत हो सकते हैं जब सभी लोगों के लिए हम समानता को बनाए रखें।”

दिल्ली के राजपथ पर ऱाष्ट्र की विविधता और गौरव को देख कर ओबामा प्रभावति हुए। उन्होंने माना कि “किसी ज़माने में भारत के गणतन्त्र दिवस पर किसी अमरीकी राष्ट्रपति को एक मुख्त अतिथि के रूप में देखने की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। लेकिन मेरा यहां आना एक नए दौर की सम्भावनाओं को दर्शाता है।” उनका यह मानना है कि “भारत व अमरीका के बीच सम्बंध इस सदी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण साझेदारियों में से एक हो सकते हैं और आज मैं आपसे प्रत्यक्ष रूप से यह बात करना चाहता हूं कि हम मिल कर क्या कुछ हासिल कर सकते हैं और **यह काम कैसे किया जा सकता है**।”

ओबामा ने “इंसाफ़ और हर इंसान की प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष” करने में महात्मा गांधी और मार्टिन लूथर किंग की प्रतिबद्धता का हवाला दिया और “आत्मा की पवित्रता व प्रेम की शुद्धता” में स्वामी विवेकानन्द के विश्वास का वर्णन किया। 'इन्ही लोगों की प्रेरणाओं से भारत के लोगों ने उपनिवेशवाद (Colonialism) को निकाल फेंका और एसे संविधान बनाए जो तीन समान शब्दों "हम प्रजातांत्रिक लोग" से शूरू होते हैं और जिसके नतीजे में हम ने तरक़्क़ी की सीढ़ियां चढ़ीं और हम चन्द्रमा व मंगल गृह तक पहुंच गए ।' उन्होंने यह भी जताया कि भारत और अमरीका के लोग दुनिया के बहुत अधिक परिश्रम करने वाले लोगों में से हैं और अमरीका दुनिया में भारत के लोगों का

सर्वाधिक विदेशी प्रवास स्थान है जहां तीस लाख से अधिक भारतीय मूल के अमरीकी भी रहते हैं ।

इन तत्वों व साधनों के मद्देनज़र उन्होंने यह आशा जताई कि अमरीका भारत का सब से अच्छा साझीदार देश हो सकता है। लेकिन उन्होंने यह भी चेताया कि "भारत के लोग ही दुनिया में भारत की भूमिका को निर्धारित कर सकते हैं। अतः यहां दिल्ली में प्रधान मंत्री मोदी और मैं ने इस पर नए सिरे से काम करना शुरू कर दिया है। आप भारत के लोगों का जीवन स्तर उपर उठाना चाहते हैं तो अमरीका भी आप का साझीदार बनना और आप को व्यापक अवसर उपलब्ध कराना चाहता है। चाहे यह सिविल न्यूक्लियर समझौता हो, अधिक बिजली उत्पादन की आवश्यकता हो, बेहतर तकनीक, उर्जा उत्पादन, सड़कों पर साफ़ सुथरी गाड़ियां, खेतों और देहातों के लिए पानी की उपलब्धता, जनस्वास्थ, व्यापार एंव निवेश में बढ़ौतरी, बुनियादी ढांचे का विकास, सड़कें, हवाई अड्डे, बुलैट ट्रेन, स्मार्ट सिटीज़, कालेजों व यूनिवर्सिटियों के बीच संयोग, कारोबार शुरू करने की चाह रखने वाले युवाओं के लिए अधिक अवसर, मानव तस्करी के ख़िलाफ़ उपाय, वातावरण में बदलाव की चुनौती से निपटना, परस्पर सुरक्षा को सुनिश्चित करना या एशिया पेसिफ़िक में भारत की भूमिका को बढ़ाना हो। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत को स्थायी सदस्यता दिलाने में समर्थन करने की मंशा भी ओबामा ने ज़ाहिर कर दी।

इन ढ़ेर सारे प्रस्तावों के लिए ओबामा ने 'हम आपके पार्टनर बनना चाहते हैं', 'हम मिलजुल कर यह कर सकते हैं', 'अगर हम सच्चे ग्लोबल पार्टनर बनते हैं', 'शक्ति के साथ ज़िम्मेदारियां भी आती हैं' जैसे वाक्यों का प्रयोग किया ।

यह सब कुछ बयान करते हुए उन्होने साफ़ कहा कि उनके सम्बोधन का मूल उद्देश्य भारत की जनता और सरकार को बताना है कि भारत के साथ संबंधों के विस्तार के लिए अमरीका की क्या शर्त है। उन्होंने अपना आत्मविश्वास व्यक्त किया कि

“विश्वव्यापी अनुभव हम दोनों देशों को दिखाता हैं कि कौन सी आकृति राष्ट्रों को मज़बूत बनाती हैं।”

अपनी बात को गम्भीरता के साथ सामने रखते हुए ओबामा ने कहा कि “हमारे देश तब दृढ़तम होते हैं जब हम यह समझते हैं कि हम सब ख़ुदा के बन्दे हैं, उसकी नज़र में हम सब बराबर है और हम सब को वह बराबर से प्रेम करता है। हमारे देनों महान देशों में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख, यहूदी, बौद्ध, जैन और अन्य बहुत से समुदाय बसते हैं। हमें गांधीजी की बौद्धिकता याद आती है जिन्होंने कहा था कि "भिन्न भिन्न धर्म और समुदाय एक ही बाग़ीचे के सुन्दर सुन्दर फूल हैं और एक ही पेड़ की शाखाएं हैं।” दूसरी तरफ़, ओबामा ने इस बात पर दुख व्यक्त किया कि “कोई भी समाज मानवीय स्वभाव की अन्धकारमय प्रवृत्तियों से मुक्त नहीं है। इन नकारात्मक प्रवृत्तियों के लिए धर्म प्रायः ख़ुदा की रोशनी से फ़ायदा रोकने का एक यन्त्र बन जाता है।” ओबामा ने तीन साल पहले अमरीका के राज्य विस्कोन्सिन में हुई घटना को याद दिलाया जब एक सिख गुरुद्वारे में एक आदमी ने घुस कर बर्बरता पूर्वक छः निर्दोष लोगों की हत्या कर दी थी। उस घटना पर दुख प्रकट करते हुए दोनों देशों ने मूलभूत सच्चाई पर पारस्परिक सहमति दी थी जिसकी आज पुनः पुश्टि करने की ज़रूरत है। वह यह कि सभी लोगों को भयमुक्त, भेदभावमुक्त व उत्पीड़न मुक्त हो कर अपनी पसन्द की आस्था रखने का अधिकार है ।

“हम दुनिया में जो शान्ति देखना चाहते हैं वह इंसान के दिल में शुरू होती है"। हम भारतवासियों को जोश दिलाते हुए ओबामा ने कहा कि “इस शान्ति का शानदार नज़ारा तब होता है जब हम धर्म, जाति व जनजाति के अन्तर से ऊपर उठकर अनुभव करते हैं और हर आत्मा की सुन्दरता से आनन्दित होते हैं।” उन्होंने ख़बरदार किया कि “यह सदाचार भारत के लिए सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण है। इन मूल्यों को बनाए रखना भारत से ज़्यादा ज़रूरी कहीं के लिए भी नहीं है। भारत तब तक कामयाबी के साथ आगे बढ़ता रहेगा जब तक वह धार्मिक आस्थाओं के आधार पर नहीं बंटेगा और एक राष्ट्र की तरह एकजुट रहेगा।”

इस एकजुटता व एकता को बनाए रखने के लिए ओबामा ने नुस्ख़ा भी बता दिया, “क्या हम संयम और सदभाव से काम लेते हैं? क्या हमारी परख उस आकृति से की जाती है जिसे मार्टिन लूथर किंग ने “चरित्र की पवित्रता” कहा था या हम त्वचा के रंग से या ईश्वर की उपासना करने के ढंग से तौले जाते हैं? भारत और अमरीका दोनों देशों में रहने वालों की विविधता ही हमारे देशों की ताक़त हैं। और हमें साम्प्रदायिक आधार पर बांटने के प्रयासों के ख़िलाफ़ स्वंय सचेत रहना है। अगर हम इस काम को अच्छी तरह करते हैं, अगर अमरीका स्वंय को अपनी विविधता और सर्व सामान्य उद्देश्यों के लिए संयुक्त प्रयासों के साथ मिलजुल कर रहने व काम करने की क्षमता रखने का एक उदारहरण बनता है; यदि भारत अपनी अत्यधिक विविधता के साथ अपने लोकतन्त्र को बना सँवार के रखता है तो हमारी यही वह पहचान है जो हमें दुनिया का लीडर बना सकती है; याद रखिए, हमारी अर्थ व्यवस्था का आकार या हमारे हथियारों की गिन्ती हमें दुनिया का लीडर नहीं बना सकते । बल्कि मिलजुल कर साथ-साथ काम करके दिखाने की क्षमता और एक दूसरे को हम कितना सम्मान देते हैं यह हमें श्रेष्ठ बनाती है।”

ओबामा ने युवाओं को विशेष रूप से सम्बोधित करते हुए उनसे कहा कि भेदभाव, पक्षपात, घिसा-पिटा दक़ियानूसी बर्ताव, उपधारणा, धृष्टता और पूर्वनिर्धारित सत - यह सब ज़्यादा उम्र वाले मस्तिष्कों में बसने वाली नकारात्मकताएं हैं; इस लिए विविधता पर आधारित समाज में आशावाद विक्सित करने में युवाओं का प्रयास बुहत महत्वपूर्ण है।

ओबामा ने यह कहने में हिचक नहीं दिखाई कि भारत और अमरीका पूरी तरह आदर्श देश नहीं हैं। किन्तु जो प्रतिमान उनमें भविष्य में साथ-साथ रहने के प्रति आशा जगाते हैं वह हैं कि “अपनी अपरिपूर्णता के बावजूद दोनों देशों के पास - आने वाली शाताब्दियों में - तरक़्की की चाबियां हैं। हम स्वतन्त्रता पूर्वक मतदान करते हैं, हम मेहनत करते हैं, हम निर्माण करते हैं और हम अविष्कार करते हैं। हम अपने कमज़ोरों

को ऊपर उठाते हैं। हम मानव अधिकारों और मानवीय प्रतिष्ठा का सम्मान करते हैं और यह मूल्य हमारे संविधानों में संरक्षित हैं। इनको बनाए रखने के लिए हमने दीर्घकालीन प्रयास किए हैं।"

"हम ऐसा इस लिए करते हैं कि हमारी नैतिक कल्पनाएं हमारे अपने जीवन की सीमाओं से आगे तक विक्सित हैं। और हम यह विश्वास रखते हैं कि हमारे जन्म लेने की स्थितियां हमारी जीवन रेखाओं को निर्धारित नहीं करतीं" ।

इस तरह, आज निर्विवाद रूप से दुनिया के सबसे बड़े नेता ने अमरीकी अंतरात्मा को कूटनीति के हवाले नहीं किया और यह घोषणा करने में शब्दों की किफ़ायत नहीं की कि दुनिया का नेतृत्व करने के लिए देश के अन्दर धार्मिक सदभाव का ऊंचा स्तर बनाना ज़रूरी है। ओबामा का यह सम्बोधन निश्चित रूप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और सभी शान्तिप्रिय लोगों के मन मस्तिष्क पर दस्तक दे रहा हो गा ।